REPORT OF THE RAILWAY CONVENTION COMMITTEE

SHRI SURENDRA LATH (Orissa): Sir, I lay on the Table a copy (in English and Hindi) of the Fifth Report of the Railway Convention Committee (2004) on Rate of Dividend for 2006-07 and other ancillary matters.

STATEMENT REGARDING GOVERNMENT BUSINESS

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES AND PENSIONS AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI SURESH PACHOURI): Sir, I beg to announce that the Government Business in this. House for the week commencing 21st August, 2006 will consist of:-

Consideration of any item of Government Business carried over from today's Order Paper. Consideration and return of the following Bills, as passed by Lok Sabha: the Appropriation (No.4) Bill, 2006; and the Appropriation (Railways) No.4 Bill, 2006.

Consideration and passing of the following Bills:- the Essential Commodities (Amendment) Bill, 2005; and the Union Territory of Pondicherry (Alteration of Name) Bill, 2006.

Consideration and passing of the Banking Companies (Acquisition and Transfer of Undertakings) and Financial Laws (Amendment) Bill, 2005, after it has been passed by Lok Sabha.

MATTERS RAISED WITH PERMISSION

Publication of objectionable material in the NCERT books

श्री रवि शंकर प्रसाद(बिहार): माननीय उपसभापति जी,मैं कृतज्ञ हूं कि आप ने मुझे बोलने का अवसर दिया। मैं एक बहुत ही महत्व का विषय सदन के सामने उठाने जा रहा हूं।

महोदय,देश के बच्चों को पढ़ाई का अवसर मिलना चाहिए,किताबें छपनी चाहिए,लेकिन एन.सी.आर.टी.द्वारा जिस तरह की किताबें छापी जा रही है,उस से देश का अहित हो रहा है,बच्चों का अहित हो रहा है। यह Modern India History की text book है,बिपिन चंद्रा की किताब को दोबारा इंट्रोड्यूस किया गया है ,वर्ष 2005 में रिवाइज किया गया है। "इस में जाटों को लुटेरा कहा गया है,गुरू गोविंद सिंह ने बहादुर शाह जफर ने मस्तब लिया बताया है" और सब से बड़ी बात यह है कि "इस में लोकमान्य तिलक,अरविदो घोष विपिन चंद्र

पाल को terrotist कहा गया है" कि इन लोगों ने टेररिज़्म का काम किया है...(**व्यवधान**)...ये सारी किताबें मेरे पास है । ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: वे बोल रहे है न ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: यह बहुत गम्भीर बात है । सारी किताबें मेरे पास है । देशभक्तों को बदनाम किया गया है ।एक बात तो यह हुई ।

दूसरी बात यह है कि बच्चों के लिए हिन्दों की किताबें है । माननीय उपसभापति जी,आज मैं आपके माध्यम से विनम्रता से आग्रह करना चाहता हूं । आप असंवैधानिक चीजों को यहां अलाऊ नहीं करते । एक सवाल है कि क्या बच्चों को पहली,दूसरी,तीसरी,चौथी,पॉचवी क्लास में असंवैधानिक भाषा पढ़ाई जाएगी ? मैं आपके सामने एक बात कहना चाहता हूं । यह "अंतरा" नामक किताब है ।यह मई,2006 में छपी है । इसमें एक कविता है,जिसके बार में मैं आपको जरूर कहना चाहता हूं । वह कविता है-मोची राम । यह बच्चों को पढ़ाई जा रही है । मैं बड़े आदर से और पीड से कहता हूं "तो रामनामी बेचकर या रंडियों की दलाली करके रोज़ी कमाने में कोई फर्क नहीं है । "...(**व्यवधान**)...हम यह क्या पढ़ा रहे है ? ...(**व्यवधान**)...

श्री मती सुषमा स्वराज (मध्य प्रदेश)**:** हमें बड़ी शर्म आ रही है ...(**व्यवधान**)...यह तो ऐसी भाषा ही नहीं है,जो कही जा सके और पढ़ी जा सके ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: बिल्कुल, ...(**व्यवधान**)...क्षमा करिए ...(**व्यवधान**)...

श्री मती सुषमा स्वराज: क्या यह कविता है? ...(**व्यवधान**)...कविता के नाम पर कलंक है ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: सुषमा जी,आप सुनिए और मेरे दोस्त,शर्मा जी भी सुनें । इसमें पांडेय बेचन शर्मा "उग्र" की एक कहानी है । शर्मा जी,जरूर सुनिए । "लेकिन जब ब्राह्मणों के घर में ब्रह्राक्षस पैदा होने लगे,तब तो यह जजमानी वृत्ति नितांत कमीना धंधा-स्वंय नीचातीत होकर भी दूसरों से चरण पुजवाना ।" यह हम बच्चों को पढ़ा रहे है । आप और सुनिए । अंतरा नामक पुस्तक में लिखा है । यह NCERT की किताब है । भारत सरकार ने छपवायी है । यह मई,2006 में बनी है । आप और सुनिए ...(**व्यवधान**)..."यह चमार वगैरह असंवैधानिक शब्द है," इसमें एक कहानी में लिखा हुआ है ...(**व्यवधान**)...एक मिनट ...(**व्यवधान**)..." अपने काम से काम रखो,क्यों इन चमारों के चक्कर में पड़ते हो? " यह बच्चों को पढ़ाई जा रही है । मैं आपसे एक बात और कहना चाहता हूं । ...(**व्यवधान**)...एक मिनट ...(**व्यवधान**)...दूसरी पुस्तक है-आरोह । ...(**व्यवधान**)...जरा मुझे अपनी बात कहने दी जाए । यह सब NCERT का पब्लिकेशन है । यह भी मई,2006 में छपी है । इसमें एक कहानी है,जिसमे लिखा हुआ है,क्या कहूं,एक लाइन पढ़ता हूं ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: बस,बस ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: "दूसरे ने जवाब दिया,अच्छा हुआ,निकाल दिया । सवेरे-सवेरे भंगी का मुंह देखना पड़ता था।" यह क्या पढ़ाया जा रहा है ...(**व्यवधान**)...और सुनिए ...(**व्यवधान**)...

श्री राशिद अल्वी(आन्ध्र प्रदेश): यह NCERT की किताब नहीं हो सकती ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: यह NCERT की किताब है ...(**व्यवधान**)...मेरे पास यह NCERT की किताब है ...(**व्यवधान**)...

श्री मती सुषमा स्वराज: यह NCERT की किताब है ...(**व्यवधान**)...जो "भंगी,चमार जैसे शब्द इस्तेमाल कर रही है "...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस.अहलुवालिया(झारखंड): उपसभापति महोदय,NCERT की किताबों में ...(**व्यवधान**)...

प्रो.राम देव भंडारी(बिहार): यह कौन-सी किताब है ...(**व्यवधान**)...किस क्लास में पढ़ाई जाती है ...(**व्यवधान**)...जरा हम लोग भी उसको देखें ...(**व्यवधान**)...यह कौन-सी किताब है,किस क्लास में पढ़ाई जाती है ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: यह दूसरी,सातवीं,आठवीं,नौवीं,दसवी,के बच्चों को पढ़ाई जाती है ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: इसे पूरा पढ़ने की आवश्यकता नहीं है ...(**व्यवधान**)...आपने यह गम्भीर विषय उठाया है ...(**व्यवधान**)...

डा.मुरली मनोहर जोशी(उत्तर प्रदेश): उपसभापति जी,सदन को मालूम होना चाहिए कि वर्तमान सरकार की देखरेख में इस प्रकार की शब्दावली प्रयोग की जा रही है,कैसे पाठ पढ़ाए जा रहे है और बच्चों के दिमाग में किस तरह की घृणा पैदा की जा रही है । ...(**व्यवधान**)...मैं चाहूंगा कि पूरा पढ़ कर बताएं ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: उपसभापति जी,आज देश में नक्सलवाद की हिंसा हो रही है । लोग मारे जा रहे है और बच्चों ने इसी "अंतरा" पुस्तक से कक्षाएं पास की ...(**व्यवधान**)...इसमें लिखा है कि "ये कवि अवतार सिंह संधु नेक्सलाइट आन्दोलन से जुड़े हुए थे ।" इसमें और क्या कहा गया है "मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती । पुलिस की मार सबसे खतरनाक नहीं होती " । ...(**व्यवधान**)...इसका क्या मतलब है ? ...(**व्यवधान**)...हम यह क्या पढ़ा रहे है ...(**व्यवधान**)..."सरकारी नोट की मुट्ठी खतरनाक नहीं होती" और एक अंतिम बात ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप क्या कहना चाहते है,आप कहिए ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: यहां पर नंद लाल बोस की जीवनी नहीं पढ़ाई जा रही है,अमृता शेरगिल की जीवनी नहीं पढ़ाई जा रही है ...(**व्यवधान**)...

एक मानीय सदस्य: यह किताब पढ़ाई जा रही है क्या ? ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: यहां पढ़ाई जा रही है,मकबूल फिदा हुसैन की,जिनका काम है-हिन्दू देवी-देवताओं का अपमान करना,उनकी नंगी तस्वीरें बनाना । उनकी जो जीवन गाथा पढ़ाई जा रही है,उसमें इतनी गंदी बातें कही जा रही है कि आपको मैं क्या बताऊं ...(**व्यवधान**)...

श्री मती सुषमा स्वराज: शिक्षा को दिशाहीन बनाया जा रहा है ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: NCERT की बुक्स में कुछ ऐसी बातें है,तो गवर्नमेंट ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: यह गलती माफ ...(**व्यवधान**)...उपसभापति जी,ये सारी किताबें मेरे पास है ...(**व्यवधान**)...

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी: सर,मैं यह कहना चाहता हूं कि मेरी जानकारी के अनुसार ये कुछ पुस्तकें हैं,जो प्रस्तावित की गई है । वे अभी भी कमेटी के विचारधीन है...(**व्यवधान**)...इस पर कोई ...(**व्यवधान**)...नहीं हुआ है ...(**व्यवधान**)...मैं माननीय सदस्य से जानना चाह रहा हूं कि ...(**व्यवधान**)...मेरी बात तो सुन लें ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: नहीं,वह ठीक है...(**व्यवधान**)...

श्री प्रवीण राष्ट्रपाल (गुजरात): तुम्हारे गुजरात में ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: राष्ट्रपाल जी,आप बैठिए ...(**व्यवधान**)...आप बैठिए ...(**व्यवधान**)... ...(**व्यवधान**)...आप एक-दूसरे की चुटकी न लें ...(**व्यवधान**)...राष्ट्रपाल जी,आप बैठिए ...(**व्यवधान**)...देखिए,यह इश्यू है ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस.अहलुवालिया: ये 2006 की किताबें हैं । और क्या चाहते है आप ? ...(**व्यवधान**)...ये किताबें स्कूलों में पढ़ाई जा रही है ।...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप बैठिए । बैठिए ।...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: सर,मैं कंपलीट कर लूं । ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप कंपलीट कीजिए । ...(**व्यवधान**)...I have other names also...(Interruptions)...प्लीज । ...(**व्यवधान**)...आप बोलिए । मैंने आपको समय दिया है, आप बोलिए,परन्तु आप पूरा समय नहीं ले सकते है । You cannot take everybody's time…(Interruptions)..रवि शंकर प्रसाद जी । ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: आपका संरक्षण चाहिए,बोलने दीजिए ।

श्री उपसभापति: बोलने दे रहा हूं । सवाल यह है कि पूरी पुस्तक पढ़ने की जरूरत नहीं है ।

श्री रवि शंकर प्रसाद: सर,अंतिम बात । ...(**व्यवधान**)...सर,यह किताब नवीं क्लास के बच्चों के लिए है । सुषमा जी,आप सुनिए,कितना गलत कहा है ? इसमें एक कहानी है रीढ़ की हड्डी । इसमें कहा है- "तुम्हीं ने कहा था कि जरा ठीकठाक करके नीचे लाना । आजकल की लड़की कितनी भी सुंदर हो,बिना टीमटाम के भला कौन पूछता है । इसी मारे मैंने पाउडर वगैरह इसके सामने रखा है ।" यह क्या पढ़ाया जा रहा है? ...(**व्यवधान**)...और सुनिए आप । ...(**व्यवधान**)... ।

श्री मती सुषमा स्वराज: इससे बड़ा महिलाओं का क्या अपमान होगा ? आज पाउडर और क्रीम का इस्तेमाल कर लड़कियों को सुंदर बताया जा रहा है । ...(**व्यवधान**)...यह क्या पढ़ा रहे है? ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप बैठिए । ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: ये सारी एनसीईआरटी की किताबें है । ...(**व्यवधान**)...मैं ये सारी किताबें टेबल पर रखूंगा । ...(**व्यवधान**)...यह देश के बच्चों के साथ क्या हो रहा है ? ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: नहीं,नहीं । इसकी जरूरत नहीं है । ...(**व्यवधान**)...

श्री मती सुषमा स्वराज: यह टेबल पर रखने दीजिए,सर । चेयरमैन साहब पढ़ना चाहेंगे,आप पढ़ना चाहेंगे । ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will not allow that..*(Intenvptions)...* नहीं,नहीं,एलाउ नहीं है वह । ...(**व्यवधान**)...वैसे जो आपने कहना था,कह दिया । गवर्नमेंट रेस्पोंस करना चाहती है । आप सुनिए । ...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस.अहलुवालिया: ये सारी किताबें स्कूलों में पढ़ाई जाती है ।...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आपने अपनी बात कहीं है । ...(**व्यवधान**)...आप आगे मत आइए,मत आइए। ...(**व्यवधान**)...आपको गवर्नमेंट का रेस्पोंस नहीं चाहिए ? ...(**व्यवधान**)...आप मकसद क्या है,गवर्नमेंट का रेस्पोंस चाहिए या नहीं ? ...(**व्यवधान**)...There is no rule…(Interruptions)…Please take it back…(Interruptions)…अथोंटिकेटेड होना है ।...(**व्यवधान**)...There is no rule …(Interruptions)…यह क्या हो रहा है? ये यहां नहीं रख सकते आप,अहलुवालिया जी । ...(**व्यवधान**)...आप देखिए,गवर्नमेंट का रेस्पोंस आपको चाहिए,न ? ...(**व्यवधान**)...आप जाइए,अपनी सीट पर । आप रूलिंग पार्टी वाले ऐसा नहीं कर सकते । Mr. Rashtrapal, why have you *come?...(Interruptions)...* You cannot come like this. You are in the ruling party*...(Interruptions)...* देखिए,ऐसा गड़बड़ करने से क्या कुछ होगा? ...(**व्यवधान**)... आप जाइए अपनी सीट पर । यह गड़बड़ नही, तो और क्या है? इसे क्या बोलते है आप? कौनसी जुबां में बोलते है आप ? ...(**व्यवधान**)...आप लोग अपनी सीट पर जाइए,मंत्री रेस्पॉड करना चाहते है। ...(**व्यवधान**)...आप जाइए । ...(**व्यवधान**)...आप लोग अपनी सीट पर जाइए ।...(**व्यवधान**)...गवर्नमेंट रेस्पॉड करेगी । ...(**व्यवधान**)...आपका मकसद जवाब लेने का नहीं है । ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी(पश्चिम बंगाल)**:** सर,मेरा एक सुझाव है । ...(**व्यवधान**)...सुनिए,सुनिए । ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: सरकार जवाब दे रही है,सुनिए । ...(**व्यवधान**)...आप लोग अपनी सीट पर जाइए । ...(**व्यवधान**)...मिस्टर अहलुवालिया,प्लीज़ हैल्प । प्लीज़ हेल्प । ...(**व्यवधान**)...माफ करना,आप सीरियस नहीं है,जवाब के लिए सीरियस नहीं है । आप लोग अपनी सीट पर जाइए । ...(**व्यवधान**)...मिस्टर अहलुवालिया ,प्लीज हेल्प । प्लीज़ हेल्प ।...(**व्यवधान**)...आप गड़बड़ करना चाहते है,आप सीरियस नहीं है । ...(**व्यवधान**)...आप क्या चाहते है? आप इस मैटर को सदन में उठाना चाहते है,आप और क्या चाहते है? ...(**व्यवधान**)...सदन में आप और क्या चाहते है? ...(**व्यवधान**)...गवर्नमेंट रेस्पॉड कर रही है,सुनिए । ...(**व्यवधान**)...आप सदन में विषय इसलिए उठाते है कि सरकार से जवाब हासिल करें,सरकार जवाब देने के लिए तैयार है लेकिन आप सुनने के लिए तैयार नहीं है । ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी: सर,मेरा एक सुझाव है । ...(**व्यवधान**)...इन्होंने जो सवाल उठाया है,वह बहुत गंभीर सवाल है ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप लोग सरकार से जवाब चाहते है,सरकार जवाब देने के लिए तैयार है ।...(**व्यवधान**)...आप सुनने के लिए तैयार नहीं है ।...(**व्यवधान**)...जवाब सुनिए । जोशी जी,आप भी मंत्री थे,तब किसी विषय पर सरकार जवाब देती थी,अब सरकार जवाब देना चाहती है लेकिन आप सुनने को तैयार नहीं है । ...(**व्यवधान**)...

डा.मुरली मनोहर जोशी: मेरी भी तो बात सुनिए,मैं क्या कह रहा हूं । ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी: सर,यह बहुत गंभीर सवाल है,जो सवाल उठाया गया है ...(**व्यवधान**)...

डा.मुरली मनोहर जोशी: मैंने यह कहा है कि प्रधानमंत्री जी को आकर इस बारे में,या तो आज या सोमवार को,अपनी स्टेटमेंट देनी चाहिए । ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप सरकार को तो सुनें पहले । ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी: सर,मेरा एक सुझाव है । यह जो सवाल उठाया गया है,यह बहुत गंभीर सवाल उठाया गया है,आप चेयरमैन के नाते उन किताबों को ऐग्ज़ामिन करवाइए और सरकार से जवाब मांगिए । ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: वही तो । पर ये सुनने के लिए ही तैयार नहीं है,पहले मैं गवर्नमेट का रेस्पॉस तो सुनूं । ...(**व्यवधान**)...

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): What about the books published during the NDA regime? *...(interruptions)...* Now, you are talking about the present books. *...(Interruptions)...* Sir, when they were in power, they communalised everything. ... (*Interruptions)...* All the textbooks were communalised by them. *...(Interruptions)...*

श्री उपसभापति: आप मेरी बात तो सुनिए।...(**व्यवधान**)...आप लोग प्लीज़ अपनी जगह पर जाइए। ...(**व्यवधान**)...अहलुवालिया जी,आप लोग प्लीज़ अपनी सीट पर जाइए। ...(**व्यवधान**)...मैं वहीं कह रहा हूं,ये चाहते नहीं है। ...(**व्यवधान**)...गवर्नमेंट का रेस्पॉस तो सुनिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: अर्जुन सिंह जी को लाइए। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : आपको गवर्नमेंट के रेस्पॉस की जरूरत नहीं है,हाऊस को डिस्टर्ब करना आपका मकसद होगा शायद।...(**व्यवधान**)...

SHRI V. NARAYANASAMY: Sir, during the NDA rule, the Human Resource Development Ministry, under Dr. Murli Manohar Joshi was totally communalised. ...*(Interniptions)*...

श्री उपसभापति: जब हाउस चल रहा है तो ...(**व्यवधान**)...पाणि जी,अब आप भी जाइए यहां से। ...(**व्यवधान**)...

अहलुवालिया जी,उनको बोलने तो दीजिए,आप इतने सीनियर मेंबर है ,आप किसी को बोलने तो दीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (उत्तरांचल): उपसभापति महोदय,अभी जो पुस्तकों का हवाला दिया गया है,जो उन्होंने पढ़कर सुनाई है,मैं नहीं कह सकता कि वे पुस्तकें एन.सी.ई.आर.टी.के सिलेबस की पुस्तकें है अथवा नहीं है, मैं दोनों नहीं कह सकता। ...(**व्यवधान**)...एक मिनट,सुन लीजिए।

लेकिन अगर ये पुस्तकें एन.सी.ई.आर.टी.के सिलेबस की है और बच्चों को स्कूलों में पढ़ाई जा रही है और उसमें जो कुछ भी पढ़ कर के सुनाया गया है वह लिखा हुआ है,तो हम सब की चिंता का विषय है। यह कोई भी नहीं चाहेगा,किसी भी दल का व्यक्ति नहीं चाहेगा,कि हमारे बच्चों को इस तरह की बातें सिखाई जाएं और इसलिए सरकार की तरफ से तो मैं नहीं,मैं अपनी व्यक्तिगत सदस्य की हैसियत से यह बात और अनुरोध सरकार से भी करना चाहूंगा कि इन पुस्तकों का कृपा करके गंभीरता से कॉगनीजेंस लीजिए और इनकी जांच कराइए कि क्या वास्तव में ये स्कूल में पढ़ाई जा रही है और अगर ये पुस्तकें एन.सी.ई.आर.टी.की तरफ से प्रेस्क्राइब्ड की गई है और वे पढ़ाई जा रही है तो यह बहुत आपत्तिजनक है,इसके ऊपर सरकार को कोई न कोई कार्रवाई करनी चाहिए।

एस.एस.अहलुवालिया: आपको किताबें दी है,मंत्री महोदय यहां है। उसका सत्यापन करने के लिए हम तैयार बैठे है और देख लें और अभी यहां पर एनाउंस करें। ...(**व्यवधान**)...

श्री मती सुषमा स्वराज: उपसभापति जी,जो बात सत्यव्रत जी ने कही है उसमें एक है कि अगर ये किताबें एन.सी.ई.आर.टी.की है,तो हम चाहते है कि आप इन किताबों को टेबल पर रखने की इजाजत दें,ताकि वे सदन की प्रोपर्टी बन जाए और सत्यव्रत जी भी देख लें,

सुरेश पचौरी जी भी देख लें,राजीव शुक्ल जी भी देख लें और फिर उनको पढ़ने के बाद देखें कि जो बात हम कह रहे है वह बात सच है या नहीं। इसलिए मैं आपसे अनुरोध करना चाहूंगी कि मेरे साथी जो किताबें सदन में रखना चाहते है,उन्हें टेबल पर रखने की अनुमति दी जाए,ताकि वे सदन की प्रोपर्टी बन जाए।

श्री उपसभापति: ऑथंटीकेट करके रखिए।

श्री मती सुषमा स्वराज: और हमारे तमाम साथी उधर के पक्ष के भी उन किताबों को पढ़कर देखलें कि वाकई वह बात सच है या नहीं। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप जरा बैठिए,मेहरबानी करके। ...(**व्यवधान**)...

श्री अमर सिंह(उत्तर प्रदेश)**:** उपसभापति जी,मैं माननीय सदन के सभी सदस्यों से,चाहें वे किसी भी पार्टी से हों,कहना चाहता हूं कि यह एक गंभीर संवेदनशील मामला है और शासक दल के होने के बावजूद,भाई सत्यव्रत चतुर्वेदी जी ने जो कहा है,मैं उनकी सराहना करता हूं, हृदय की गहराइयों से । यह ऐसा संवेदनशील मामला है कि इसमें कोई राजनीति नही है। मैं यह चाहता हूं जैसा कि आदरणीय सुषमा जी ने कहा है कि इन्हें सदन के पटल पर रख दें और ये सदन की सम्पत्ति हो जाए,और इसमें सभी देख लें और सत्यापित कर लें कि यह जो बड़ा अगर है,यह अगर मगर भी हट जाए और अगर इस तरह की बातें हो रही हैं तो निश्चित रूप से यह बहुत गंभीर मसला है और यह मसला सिर्फ आपका नहीं है,हम सब का है। हम सब मिल करके इस मसले पर विचार करें और विचार करके जो हिस्ट्री को डेस्ट्रॉय किया जा रहा है,हमारे इतिहास को बदला जा रहा है और नई पीढ़ी को एक विषाक्त वातावरण दिया जा रहा है,इसका मिल करके हम सब सामना करें।...(**व्यवधान**)...

श्री एस.एस.अहलुवालिया: सर, ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: अहलुवालिया जी,जरा दूसरों को भी मौका दो,आप ही बोलते रहेंगे। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी : सर,यह जो बात उठाई गई है यह बहुत ही गंभीर है। जो आज जानकारी दी गई,अगर यह सही है तथा ये प्रेस्क्राइब्ड किताबों में है तो इसको दुरूस्त करने की जरूरत है। इसके अंदर हम समझते है कि कोई भी ...(**व्यवधान**)...

श्री मती सुषमा स्वराज: और माफी मांगने की भी जरूरत है।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी: इनको दुरूस्त करने की जरूरत नहीं है,बल्कि इसके लिए जिम्मेदार कौन है ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: उनको अपनी बात करने दीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी: सर,आपने हमें बोलने की अनुमति दी है। आप सुनिएगा।

श्री उपसभापति: वही मुश्किल है। आपको बोलने के लिए अनुमति देते है और दूसरे खड़े होकर बोलने लग जाते है।

श्री सीताराम येचुरी: हमने कहा कि इसको दुरूस्त करने की जरूरत है,पहली बात । गुनाहगार को सजा देने की जरूरत है,दूसरी बात । और जो भी है आप इसके बारे में जांच करवाइये कि यह किताब कैसे आई,कब और कैसे लिखी गई । ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: गवर्नमेंज को रेसपांड करने दीजिए । ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी: सर,मैं आपके माध्यम से सरकार से आग्रह कर रहा हूं कि इसको दुरूस्त करवाइये और इसके ऊपर एक्शन लीजिए ।

श्री अवनि राय(पश्चिमी बंगाल)**:** उपसभापति जी,ऐसा है कि कक्षा छह से लेकर कक्षा ग्यारह तक साहित्य की हो या इतिहास की हो,जिस किताब से इस ढंग से लिखा गया है,उसके बारे में टी.वी.में इससे पहले भी बहुत बार ऐतराज़ किये गये है । उसमें ऐसे शब्द है,जो उसमें नहीं लिखे जाने चाहिए । उसमें गाली- गलौज है,जात उठाकर बात कही गई है और नीचे लिखा गया है कि ये शब्द असंवैधानिक है,फिर भी लिखे गये है और यह एक स्टार लगा दिया गया है । इन किताबों के बारे में एक दिन से नहीं,बहुत दिनों से आवाज उठाई जा रही है । सरकार के लिए उचित हे कि वह इन सब किताबों को,कक्षा छह से लेकर कक्षा ग्याहर तक इतिहास और साहित्य की जितनी किताबें है,उन पर अभी तुरन्त बैन होना चाहिए,अन्यथा बच्चों के मन पर इसका बहुत बुरा असर पड़ेगा । ...(**व्यवधान**)... आप जांच करें अथवा जांच नहीं करें,लेकिन जो-जो इसके साथ है,जिन्होंने इनको लिपिबद्व किया है,जो नाम है,लेखक को छोड़िये, पुराने किसी लेखक की होगी,लेकिन जिन्होंने इनका संकलन किया है,उनको भी सज़ा मिलनी चाहिए । यह एनीसीईआरटी की एकाध किताब में नही है,बहुत सारी किताबों में इस प्रकार की बाते है । एनसीईआरटी की किताबें पूरे देशभर में,जहां सीबीएसई का कोर्स है,उसमें पढ़ाई जाती है,आल इंडिया के कोर्स में पढाई जाती है । यह बडी दुखदाई और मिनिस्ट्री की ओरसे इस बारे में कदम उठाये जाने चाहिए । ...(**व्यवधान**)...ये किताबें बैन होनी चाहिए ।

श्री मंगनी लाल मंडल(बिहार)**:** उपसभापति जी,माननीय सदस्य श्री रवि शंकर प्रसाद जी ने जिस विषय का यहां उल्लेख आपकी अनुमति से किया है,यह बहुत गंभीर विषय है । यह राजीनति का विषय नहीं है । यह सिर्फ शिक्षा का विषय नहीं है,यह हमारे संस्कार,संस्कृति और भविष्य से जुड़ा हुआ विषय है । एनसीईआरटी के बारे में अक्सर कई बातें समाचार-पत्रों में अनावश्यक,अनर्गल छपती रहती है,और ऐसी बातें छपती हैं,जिनसे इस देश के करोड़ों लोगों की आस्था पर ही प्रहार नहीं होता है,बल्कि ऐसा लगता है कि हम शिक्षा के नाम पर कोई दूसरी चीज़ परोस रहे है अपने नौनिहालों के बीच में । महोदय,इसीलिए हमको दो-तीन बातें निवेदन करनी है । पहली बात,जो उन्होंने पुस्तकें रखी है,जो विषय उन्होंने उठाया है,उसकी जांच होनी चाहिए । नम्बर दो,जो इसमें लिप्त पदाधिकारी है,शिक्षाविद है,उनको दंडित किया जाना चाहिए । नम्बर तीन,इसकी सुनिश्चित व्यवस्था की जानी चाहिए कि हमारी संस्कृति और हमारी सांस्कृतिक धरातल,पृष्ठभूमि और शिक्षा को बर्बाद करने वाली कोई टीम भविष्य में ऐसी गठित नहीं हो,जो इस तरह की पुस्तकें लिखे,इन तीनों चीजों की गारंटी होनी चाहिए ।...(**व्यवधान**)...इन सारी पुस्तकों को सदन में रखने के लिए अनुमति मिलनी चाहिए । धन्यवाद ।

श्री विजय जे.दर्डा(महाराष्ट्र): सर,मैं रवि शंकर जी का धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने एक गंभीर विषय के ऊपर इस सदन का ध्यान आकर्षित किया। कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि शिक्षा के अंदर राजनीति नहीं होनी चाहिए। मैं यह मानता हूं कि जब बीजेपी की सरकार थी तब इन्होंने किताबों में बहुत राजनीति की,उन्होंने राजनीति की,इसलिए इस गवर्नमेंट को भी करना चाहिए,ऐसा मैं नही मानूंगा। आप जानते हैं कि क्या-क्या आप लोगों ने किया ? ...(**व्यवधान**)...पंडित जी,यहां पर बैठे हैं।...(**व्यवधान**)...

डा.मुरली मनोहर जोशी: सर,इस पर हम बहस करने के लिए तैयार हैं। ...(**व्यवधान**)...हमने क्या किया था और क्या अब हो रहा है,इस पर हम पूरे दिन बहस करने के लिए तैयार हैं। ...(**व्यवधान**)...हम यहां तैयार हैं और आपके अखबार में भी बहस करने के लिए तैयार है। ...(**व्यवधान**)...देश के किसी भी कोने में बहस करने के लिए तैयार है। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप बैठ जाइये। ...(**व्यवधान**)...

डा.मुरली मनोहर जोशी: आप जो शब्द प्रयोग कर रहे है,हमने कुछ नहीं किया था ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप जरा सुनिए। ...(**व्यवधान**)...आप उनको बोलने दीजिए ...(**व्यवधान**)...आप बोलते हैं,तो वह भी बोलते हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री विजय जे.दर्डा: विशेषरूप से, ...(**व्यवधान**)...मैं अपनी बात संक्षिप्त में रख रहा हूं। इसलिए कि उन्होंने किया,तो हमें भी करना चाहिए,यह मैं मानने वालों में से नहीं हूं।...(**व्यवधान**)...

श्री रूद्रनारायण पाणि(उड़ीसा): महोदय,उन्होंने कहा ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप,क्या पाणि जी ...(**व्यवधान**)...

श्री विजय जे.दर्डा: उसकी जांच होनी चाहिए।...(**व्यवधान**)...और जिन लोगों ने ...(**व्यवधान**)...

श्री रूद्रनारायण पाणि: डन्होंने यह कहा कि राजनीति की ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप बैठ जाइये। आप हर बात पर इंटरफेयर करेंगे क्या ? ...(**व्यवधान**)...प्लीज आप बैठ जाइये। ...(**व्यवधान**)...आर हर बात पर मत उठा कीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री विजय जे.दर्डा: सर,इसकी पूरी जांच होनी चाहिए औरयह मापदंड तय होने चाहिए कि इस प्रकार की हरकतें समय-समय पर न हों।

श्री राजीव शुक्ल(महाराष्ट्र): सर...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: अब आप सरकार की बात भी सुन लीजिए। यह डिबेट नहीं हो रही है। will not allow everybody to speak. *...(Interruptions)...*

श्री राजीव शुक्ल: सर,मैं केवल एक मिनट लेना चाहता हूं।

श्री उपसभापति: यह डिबेट नहीं हो रही है,ज़ीरों ऑवर है।...(**व्यवधान**)... What is this? Everybody wants to speak.

श्री राजीव शुक्ल: सर,हम इस बात से सहमत हैं कि जांच होनी चाहिए लेकिन जांच मध्य प्रदेश और गुजरात की पुस्तकों की भी होनीचाहिए।...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: वह ठीक है। ...(**व्यवधान**)...अच्छी बात है। ...(**व्यवधान**)...

कार्मिक,लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री(श्री सुरेश पचौरी)**:** इज्ज़तमुवाब उपसभापति महोदय,विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में और उनके लिए क्या पाठ्य सामग्री उपलब्ध हो,क्या न हो,यह एक बहुत संजीदगी का विषय है। इसमें निश्चित रूप से हमें अपनी जिम्मेदारी और जवाबदेही का निर्वहन बहुत गंभीरता से करना चाहिए-मैं इस बात का पक्षधर हूं। इस सदन के सभी सम्मानीय सदस्यों की भी यही राय है कि जो आज के बालक हैं,वे कल के भारत के नागरिक है,उनके लिए किस प्रकार की पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाए,इसको बहुत गंभीरता से राष्ट्र हित में लिया जाना आज के समय का तकाज़ा है। एनसीईआरटी की पुस्तकों से संबंधित जो मुद्दो सम्मानित सदस्यों ने उठाया है और जिन बिन्दुओं का ज़िक्र किया है तथा उस संबंध में जो गंभीरता दिखायी है,मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि सदन की भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए इसकी जांच कराया जाना आवश्यक है। मैं सरकार की ओर से इस बात की ...(**व्यवधान**)...

श्री राजीव शुक्ल: मध्य प्रदेश और राजस्थान की भी जांच हो। ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसाद: आप चुप रहिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेश पचौरी : जांच करा लूंगा और इसको बहुत गंभीरता से लेते हुए जो संबंधित मंत्रालय है,सदन की भावनाओं से उन्हें अवगत करा दूंगा।

श्री रूद्रनारायण पाणि: समय सीमा बता दीजिए। ...(**व्यवधान**)...

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL (Gujarat): Sir, I want the kind attention of the House to a very serious problem.

श्री रवि शंकर प्रसाद: सर,यह बहुत गंभीर विषय है।पूरे हाउस ने कहा है। ...(**व्यवधान**)...माननीय सुरेश जी कुछ समय सीमा बता दें।...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति:वे बता देंगे ...(**व्यवधान**)... It is an assurance. Please...

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, what is this? *...(Interruptions)...*

श्री विक्रम वर्मा(मध्य प्रदेश)**:** सर,इसी शैक्षणिक सत्र में ये पुस्तकें हट जानी चाहिए नहीं तो उन्हें बच्चे पढ़ेंगे। ...(**व्यवधान**)...

श्री कलराज मिश्र(उत्तर प्रदेश)**:** मान्यवर,मैंने एक नोटिस दिया था।

श्री उपसभापति: किस बारे में ?

श्री कलराज मिश्र: प्रधानमंत्री निवास के अंदर जो ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: वह अभी एडमिट नहीं हुआ है ।

श्री कलराज मिश्र: मान्यवर,आंतकवाद ...(**व्यवधान**)...

Alleged failure of Government of Gujarat In providing relief to the people affected due to heavy rains and floods

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL (Gujarat): Sir, I want to bring to the kind notice of this House that the Government of Gujarat has totally failed in providing relief to the people affected due to heavy rains, floods. It was not a natural disaster. It was a man-made disaster. We in Gujarat always welcome rain. We pray for rain. Rain has not created the problem. It was the mismanagement by the Irrigation Minister who stays in Surat. The Chief Minister has himself admitted and he is now talking of appointing a Commission of Inquiry for early and late release of water from the Ukai Dam, from the Dharoi Dam from where the Surat district, the Anand district, the Kheda district, the Ahmedabad district thousands and thousands of people are marooned, hundreds of people are dead, thousands of animals are dead. The problem of Surat is they are not able to remove the mud, they are not able to remove the bodies of dead animals. In the previous flood the Central Government gave Rs. 500...*(Interruptions)...* Sir, I will complete it.

श्री कांजीभाई पटेल(गुजरात)**:** यह सच नहीं है ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेन्द्र लाठ(उड़ीसा)**:** यह सच नहीं है । ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You complete it. That will not go on record.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, the Central Government has given Rs. 500 crores to the Government of Gujarat. They have spent only Rs. 378 crores. The balance amount is remaining. This time hon. Prime Minister visited, hon. Defence Minister visited, hon. Home Minister visited and again the Government of India has announced Rs. 500 crore relief to the State of Gujarat. The very next day the Chief Minister of the State was criticising the hon. Prime Minister of the country, it «fTcr& ***f*** % 3T»ft ?ra» $w *•?fH* srwri He does not know that money is not sent in cash from Delhi to Ahmedabad.